नाम - डॉ. प्रदीप कुमार राय (एसोसिएट प्रोफेसर, राजकीय महिला कॉलेज, बाबाएक)
विषय - राजनीति-शास्त्र
कक्षा - बी.ए. (प्रतिष्ठा) पार्ट - 01, पेपर - 01
दिनांक - 04.07.2020
टॉपिक - मार्क्स के अतिरिक्त मूल्य का सिद्धांत -

मार्क्स के अतिरिक्त मूल्य - कार्ल मार्क्स ने अपनी पुस्तक 'Das Capital' में अतिरिक्त मूल्य के सिद्धांत का वर्णन किया है। मार्क्स ने अपने 'मूल्य के श्रम सिद्धांत' के आधार पर बताया है कि प्रत्येक वस्तु का वास्तविक मूल्य उस पर खर्च किये गये केवल श्रम के अनुसार होता है किंतु बाजार में वह वस्तु काफी ऊंचे मूल्य पर बेची जाती है और उसके बेचने से प्राप्त होने वाला अतिरिक्त धन पूंजीपति के द्वारा अपने पास रख लिया जाता है। यही रखा हुआ धन ही 'अतिरिक्त मूल्य' है अर्थात् यह वह मूल्य है जिसे पूंजीपति मजदूर के श्रम से प्राप्त करता है जिसके लिये उसने मजदूर को कोई मूल्य नहीं चुकाया है। मैक्सी के शब्दों में, 'यह वह मूल्य है जिसे पूंजीपति श्रमिकों के खून-पसीने की कमाई (Tax) के रूप में वसूल करता है।' मार्क्स के अनुसार, यह अतिरिक्त मूल्य वस्तुतः श्रमिकों के श्रम का ही परिणाम है। पूंजीपतियों द्वारा इस प्रकार अतिरिक्त मूल्य का हड़प लिया जाना आधुनिक पूंजीवादी व्यवस्था का बड़ा अन्याय है तथा इस व्यवस्था में श्रमिकों की स्थिति दासों से नाम मात्र के लिये ही अच्छी है। श्रमिकों के पास उत्पादन के साधनों को खरीदने की शक्ति नहीं होती है फलतः वे बाध्य होकर अपना श्रम पूंजीपतियों को नाम-मात्र की कीमत पर बेच देते हैं परिणामतः उनके श्रम से उत्पन्न अतिरिक्त मूल्य पूंजीपतियों की जेबों में चला जाता है।

आलोचना — इसकी प्रमुख आलोचनायें निम्नवत् हैं -

(1.) श्रम उत्पादन का एकमात्र साधन नहीं - आर्थिक व्यवस्था के संबंध में श्रम को ही वस्तु के मूल्य का एकमात्र व अंतिम निर्धारक तत्त्व मानना त्रुटिपूर्ण है क्योंकि श्रम के अतिरिक्त भूमि, प्रबंध व साहस के द्वारा भी उत्पादन के साधन के रूप में कार्य किया जाता है। अतः लाभ को केवल श्रम का अतिरिक्त मूल्य न कहकर यदि इन सभी साधनों का परिणाम कहा जाये तो अधिक तर्कसंगत और औचित्यपूर्ण होगा।

(2.) पूंजीपति द्वारा किये जाने वाले अनेक व्ययों का उल्लेख नहीं - पूंजीपति द्वारा श्रमिक के अतिरिक्त अनेक बातों पर धनराशि व्यय की जाती है यथा कारखाने के सुधार, मशीनों की मरम्मत, श्रमिकों के उत्तम जीवन-स्तर आदि जिसे वह अतिरिक्त मूल्य से ही व्यय करता है।

(3.) सिद्धांत अस्पष्ट और अतिरंजित - मार्क्स के इस सिद्धांत में मूल्य (Value) और दाम (Price) आदि शब्दों का प्रयोग मनमाने और अतिरंजित ढंग से किया गया है। इसमें कुशलता, प्रबंध, संगठन या योग्यता आदि की भी आवश्यकता का उल्लेख नहीं मिलता।

(4.) मानसिक श्रम की उपेक्षा - मार्क्स द्वारा शारीरिक श्रम को ही श्रम बताया गया है और मानसिक श्रम की उपेक्षा की गई है जबकि तकनीकी ज्ञान, प्रबंध पटुता, व्यवसाय कुशलता, वस्तुओं के निर्माण और बाजार वस्तुओं के लिये उपयुक्त बाजार ढूंढने में महत्वपूर्ण योग देते हैं।

(5.) सिद्धांत विरोधाभासयुक्त - एक ओर तो मार्क्स का यह कहना है कि पूंजीपति अतिरिक्त मूल्य या लाभ प्राप्ति के लिये नयी मशीनें लगाता है दूसरी ओर यह भी कहता है कि मशीनों, कच्चे माल आदि से कोई अतिरिक्त मूल्य प्राप्त नहीं होता यह तो केवल श्रमिकों से ही मिलता है ये दोनों परस्पर विरोधी बातें हैं।

(6.) आर्थिक कम, प्रचारात्मक अधिक - इस सिद्धांत का उद्देश्य वस्तु के मूल्य के कारण की विधिवत् विवेचना नहीं, वरन् पूंजीवादी व्यवस्था में मजदूर वर्ग के साथ किये जाने वाले अन्याय का प्रचार है। केट्स हन्ट के अनुसार, 'वास्तव में इसके द्वारा यह दिखाने की चेष्टा की गई है कि साधन संपन्न वर्ग सदैव ही साधनहीन वर्ग के श्रम पर जीवित रहता है।'

उपर्युक्त आलोचनाओं के बावजूद यह कहा जा सकता है कि इसने श्रमिकों में चेतना और जागृति तथा एकता की भावना को जन्म दिया है व्यापार और यंत्रीकरण के दोष बताये तथा विश्व के मजदूरों में एकता का अलख जगाया।

नाम – डॉ. प्रदीप कुमार राय (एसोसियेट प्रोफेसर, रोहतास महिला कॉलेज, सासाराम)

विषय – राजनीति-शास्त्र

कक्षा – बी.ए. (प्रतिष्ठा) पार्ट-01, पेपर-01

दिनांक – 04.06.2020

टॉपिक – मार्क्स के अतिरिक्त मूल्य का सिद्धांत –

कार्ल मार्क्स ने अपनी पुस्तक 'Das Capital' में अतिरिक्त मूल्य के सिद्धांत का वर्णन किया है। मार्क्स ने अपने 'मूल्य के श्रम सिद्धांत' के आधार पर बताया है कि प्रत्येक वस्तु का वास्तविक मूल्य उस पर खर्च किये गये केवल श्रम के अनुसार होता है किंतु बाजार में वह वस्तु काफी ऊंचे मूल्य पर बेची जाती है और उसके बेचने से प्राप्त होने वाला अतिरिक्त धन पूंजीपति के द्वारा अपने पास रख लिया जाता है। यही रखा हुआ धन ही 'अतिरिक्त मूल्य' है अर्थात् यह वह मूल्य है जिसे पूंजीपति मजदूर के श्रम से प्राप्त करता है जिसके लिये उसने मजदूर को कोई 'मूल्य नहीं चुकाया है।' मैक्सी के शब्दों में, 'यह वह मूल्य है जिसे पूंजीपति श्रमिकों के खून-पसीने की कमाई ([illegible]) के रूप में वसूल करता है।' मार्क्स के अनुसार यह अतिरिक्त मूल्य वस्तुतः श्रमिकों के श्रम का ही परिणाम है। पूंजीपतियों द्वारा इस प्रकार अतिरिक्त मूल्य का हड़प लिया जाना आधुनिक पूंजीवादी व्यवस्था का बड़ा अन्याय है तथा इस व्यवस्था में श्रमिकों की स्थिति दासों से नाम मात्र के लिये ही अच्छी है। श्रमिकों के पास उत्पादन के साधनों को खरीदने की शक्ति नहीं होती है फलतः वे बाध्य होकर अपना श्रम पूंजीपतियों को नाम-मात्र की कीमत पर बेच देते हैं परिणामतः उनके श्रम से उत्पन्न अतिरिक्त मूल्य पूंजीपतियों की जेबों में चला जाता है।

आलोचना — इसकी प्रमुख आलोचनायें निम्नवत हैं –

(1.) श्रम उत्पादन का एकमात्र साधन नहीं – आर्थिक व्यवस्था के संबंध में श्रम को ही वस्तु के मूल्य का एकमात्र व अंतिम निर्धारक तत्त्व मानना त्रुटिपूर्ण है क्योंकि श्रम के अतिरिक्त भूमि, प्रबंध व साहस के द्वारा भी उत्पादन के साधन के रूप में कार्य किया जाता है। अतः लाभ को केवल श्रम का अतिरिक्त मूल्य न कहकर यदि इन सभी साधनों का परिणाम कहा जाये तो अधिक तर्कसंगत और औचित्यपूर्ण होगा।

(2.) पूंजीपति द्वारा किये जाने वाले अनेक व्ययों का उल्लेख नहीं – पूंजीपति द्वारा श्रमिक के अतिरिक्त अनेक बातों पर धनराशि व्यय की जाती है यथा कारखाने के सुधार, मशीनों की मरम्मत, श्रमिकों के उत्तम जीवन, बोनस आदि जिसे सब अतिरिक्त मूल्य से ही व्यय करना होता है।

(3.) सिद्धांत अस्पष्ट और अतिरंजित – मार्क्स के इस सिद्धांत में मूल्य (Value) और दाम (Price), आदि शब्दों का प्रयोग मनमाने और अतिरंजित ढंग से किया गया है। इसमें कुशलता, प्रबंध, संगठन या योग्यता आदि की भी आवश्यकता का उल्लेख नहीं मिलता।

(4.) मानसिक श्रम की उपेक्षा – मार्क्स द्वारा शारीरिक श्रम को ही श्रम बताया गया है और मानसिक श्रम की उपेक्षा की गई है जबकि तकनीकी ज्ञान, प्रबंध पटुता, व्यवसाय कुशलता, वस्तुओं के निर्माण और तैयार वस्तुओं के लिये उपयुक्त बाजार ढूंढने में महत्त्वपूर्ण योग देते हैं।

(5.) सिद्धांत विरोधाभास युक्त – एक ओर तो मार्क्स का यह कहना है कि पूंजीपति अतिरिक्त मूल्य या लाभ प्राप्ति के लिये नयी मशीनें लगाता है दूसरी ओर यह भी कहता है कि मशीनों, कच्चे माल आदि से कोई अतिरिक्त मूल्य प्राप्त नहीं होता यह तो केवल श्रमिकों से ही मिलता है ये दोनों परस्पर विरोधी बातें हैं।

(6.) आर्थिक कम, प्रचारात्मक अधिक – इस सिद्धांत का उद्देश्य वस्तु के मूल्य के कारण की विधिवत् विवेचना नहीं, वरन् पूंजीवादी व्यवस्था में मजदूर वर्ग के साथ किये जाने वाले अन्याय का प्रचार है। केर्यू हण्ट के अनुसार, ~~यह वास्तव~~ 'इसके द्वारा यह दिखाने की चेष्टा की गई है कि साधन संपन्न वर्ग सदैव ही साधनहीन वर्ग के श्रम पर जीवित रहता है।

उपर्युक्त आलोचनाओं के बावजूद यह कहा जा सकता है कि उसने श्रमिकों में चेतना और जागृति तथा एकता की भावना को जन्म दिया, व्यापार और यंत्रीकरण के दोष बताये तथा विश्व के मजदूरों में एकता का अलख जगाया।